प्रो. यार्लगड्डु लक्ष्मी प्रसाद

सत्यभामा

(पौराणिक उपन्यास)

एमेस्को

सात्राजिती

प्रकृति ने रौद्र रूप धारण किया। प्रचंड वेग से वायु बहने लगी। श्यामल मेघ गगन में मंडराने लगे। कोई भीषण उत्पात होनेवाला हो - इसकी पूर्व सूचना देते हुए लंबे-लंबे वृक्षों को उखाड़ फेंकने की क्षमता रखने वाली तूफानी हवाएँ बहने लगीं। तीव्र प्रभंजन के आघातों से झूमनेवाले वृक्ष अपने केश फैलाए उग्र देवताओं के समान दिखायी देने लगे। किसी उपद्रव की सूचना देते हुए जानवरों का क्रंदन पर्वत श्रेणियों के परिसरों में प्रतिध्वनित हो रहा था।

वे सारे दृश्य अत्यंत भयानक लग रहे थे। वे दृश्य, वहाँ के मार्ग, अरण्य, और उनके पीछे पर्वत श्रेणियों में प्रतिध्वनित जानवरों की चीखें - ये सभी दर्शकों को विचलित करने लगीं। ये दर्शकों की धीरता पर प्रहार कर रही थी। किन्हीं भद्र परिवारों की महिलाओं को रथों में बिठाकर अश्वारुढ सैनिक उस मार्ग में जा रहे थे। घोडों की टापों, हाथियों की चिंघाडों और उस अरण्य में सुनाई देने वाली कर्कश ध्वनियों व जानवरों की चीखों से वे विचलित नहीं हुए। यह बड़ी विचित्रता की बात है। पल-पल परिवर्तित प्रकृति के इस रूप को देखकर वे चकित हो गए। उनके मन में घने बादलों के समान तरह-तरह के विचार मंडराने लगे। उन्हें यह अनुभव हुआ कि कालिमा उन्हें घेरने लगी। क्या इस यात्रा का कोई अंतिम पडाव है? हम कहाँ जा रहे हैं?

काले-काले बादलों में प्रकट होने वाली विद्युल्लताओं के समान उन रथों में बैठकर यात्रा करने वाली ललनाएँ अत्यंत सुंदर दिखायी दे रही थीं । वे असामान्य थीं । वे थीं - रुक्मिणी, सत्यभामा, जांबवती, लक्षणा, कालिंदी, मित्रविंदा, नाग्नजिती और भद्रा। ये सभी सौंदर्य की अनन्य प्रतिमाएँ थीं । श्रीकृष्ण के श्रृंगार रसास्वादन में तल्लीन हो ये ललनाएँ धन्य हुई थीं। इनकी सुंदरता अनुपम थी। ये सभी असूर्यंपश्याएँ थीं। श्रीकृष्ण और यादववंश के प्रमुख योद्धाओं की ये प्रिय पत्नियाँ थीं।

अंतःपुर की इन स्त्रियों को ले जाने वाले रथों की ओर कोई अपनी आँख उठाकर देखने का साहस नहीं कर सकता था। द्वारका से ये रथ निकले थे और अर्जुन इन रथों का नेतृत्व कर रहा था। अर्जुन का नाम-स्मरण करते ही भीषण प्रकृति भी शांत हो जाती है। उत्तुंग तरंगें शांत होकर सागर में विलीन हो जाती हैं। अर्जुन के नाम-स्मरण मात्र से दामिनी व वज्रघोष भी शांत हो जाते हैं। अर्जुन, फाल्गुन, किरीटी, श्वेतवाहन, भीभत्स, विजय, सव्यसाचि, धनुंजय आदि अर्जुन के नामों का स्मरण करते ही जो प्रकृति अपने भयानक रूप की उपसंहृति करती है, आज उसी प्रकृति के प्रलय-तांडव को देखने पर वे चकित हो रहे थे, लेकिन भयभीत नहीं ।

रथाश्व थक गए थे। थके-मांदे हाथी धीमी गति से चल रहे थे। रथ-चक्रों की भी गति मंद पड़ गयी । रथों पर बैठकर सवार करनेवालों के चेहरों पर भय एवं विस्मय की रेखाएँ उभरने लगी थीं। वे स्वयं को ढाँढस बाँधने लगे। उनके मन में यह शंका उत्पन्न होने लगी कि क्या हम लोग द्वारका के पुनः दर्शन कर सकते हैं? क्या वह भू-स्वर्ग हमें फिर से दिखायी पडेगा? ये प्रश्न इसलिए उनके मन में उठने लगे कि उनके द्वारका से निकलने के थोडे ही क्षणों के बाद समुद्र की उत्तुंग तरंगों ने उनकी आँखों के सामने ही उस शहर को डुबो दिया था। इस दृश्य को देखकर वे भय विह्वलित हो गए। कई लोग अनाथ हो गए। यादव वंश की कई स्त्रियाँ विधवाएँ बन गयीं। अपनी संतान को खो कर कई वृद्धजन अनाथ हो गए। वे सभी अर्जुन को ही अपना सर्वस्व मानकर उनके साथ यात्रा में निकल पड़े।

पिछले कुछ दिनों से उनकी आँखों के सामने मृत्यु डरावना नृत्य करने लगी। महाभारत युद्ध के पश्चात युधिष्ठिर का राज्याभिषेक हुए साढे तीन दशक बीत गए। अब नजाने क्यों प्राकृतिक विपदाएँ होने लगीं ? सुबह होते ही तेज हवाएँ चलीं और बालू की वर्षा हुई। आकाश के मेघाच्छन्न न होने पर भी तीव्र वज्रपात हुआ। उल्काएँ गिर पडीं। ग्रीष्म के दिनों में कोहरा छा गया।

कुछ ही दिनों के पहले श्रीकृष्ण के दर्शन करने की कामना को लेकर कन्व, भृगु, नारद और विश्वामित्र अपने शिष्यों के साथ द्वारका पधारे थे। उनके आने से पूर्व द्वारका स्वर्गधाम था, लेकिन उनके वहाँ से चले जाने के बाद द्वारका मृत्यु-लोक बन गया था। द्वारका के नागरिकों का यह स्वयंकृत अपराध ही है। छेड़-छाड में कही गयी एक बात ने संपूर्ण द्वारका को तहस-नहस कर दिया।

जब भृगु आदि ऋषि लोग कृष्ण से मिलने द्वारका आए तब ऋषियों का उपहास करने के लिए श्रीकृष्ण और जांबवती के पुत्र सांब को गर्भवती का रुप धारण करवाकर वृष्णि वंश के कुछ युवकों ने ऋषियों के सामने खडा कर दिया और उनसे यह पूछा गया कि क्या यह संतान को जन्म देगी? मुनि ऋषियों ने शाप दिया कि ''सांब के गर्भ से मूसल निकलेगा, जिससे संपूर्ण यादव वंश का नाश होगा।'' यह शाप देकर वे श्रीकृष्ण से मिले बिना द्वारका से चले गए।

दूसरे ही दिन सांब ने लौह मूसल को जन्म दिया। उसे देखकर सभी भयभीत हो गए। ऋषियों के शाप से बचने के लिए उस मुसल को चूर-चूर कर समुद्र में फेंक दिया गया तो लहरों ने उसके कणों को तट पर पहुँचा दिया, वै तटों पर सींके बने, जो संपूर्ण यादव-वंश के नाश के कारण बने। तोते उल्लू के समान घुघुआने लगे। बकरे कुत्तों के समान भौंकने लगे। बलराम और श्रीकृष्ण को छोड़कर यादव वंश के सभी लोग पाप कार्यों में निमग्न हुए। नाते-रिश्ते की सुध खोकर सभी स्त्रियों के साथ वे श्रृंगार करने लगे। यादव वंश की महिलाएँ अपने पतियों की तीव्र उपेक्षा करते हुए उच्छंखल श्रृंगार करने लगीं। होमाग्नि कई वर्णों में प्रकाशित होने लगी। होमाग्नि ज्वालाएँ प्रज्वलित हो उठीं और बदबू निकल पड़ी। भात में कीड़े-मकोड़े दिखायी पड़े।

श्रीकृष्ण ने एक उत्सव का आयोजन कर, इन उत्पातों को देखकर हताश हुए द्वारकावासियों को उस में भाग लेने आमंत्रित किया। उन्होंने उस रात को भयानक सपने देखे। कृष्ण वर्ण की कुछ स्त्रियों ने घरों में घुसकर महिलाओं को खूब सताया। यादव वंश के वीरों के शस्त्रास्त्रों, झंडों और आभूषणों की चोरी कर राक्षस भाग गए। श्रीकृष्ण का चक्र अचानक उड़कर आकाश में अदृश्य हो गया। श्रीकृष्ण का दिव्यरथ भी अदृश्य हो गया।

श्रीकृष्ण के आदेश के अनुसार उत्सव में भाग लेने यादव वंश के लोग समुद्र तट की ओर निकल पड़े। तरह-तरह के पकवान बनवाए। महिलाएँ खूब सज-धज कर पालकियों में निकल पड़ीं। बलराम नहीं आए। तपस्या करने वे चले गए।

समुद्र के तट पर गीतालाप करते हुए वे नृत्य करने लगे और सुरा-सेवन कर भोजन भी किया। उसके बाद हास-परिहास करते हुए उन्होंने एक-दूसरे को छेड़ना शुरु किया। सात्यकि और कृतवर्मा के बीच महाभारत युद्ध का प्रस्ताव आया। शराब के नशे में सुध खोकर सात्यकि ने यह कहकर कृतवर्मा की निंदा की कि उसने गहरी नींद में सोये हुए को मार डाला था। तब सात्यकि ने यह प्रश्न किया कि क्या तुमने निस्सहाय